

प्रिय युवा वंशुओं और बहनों,

विशाल भारत प्राकृतिक विविधताओं से भरा पड़ा है। एक ही जमीन देश में उष्ण, शीत व लम्बमय जलवायु विविधता रहती है। विभिन्न अंचलों में व्युत्पन्न विषयों से बदलता है। अनेक प्रकार की वन-सम्पदा उपलब्ध है। अनेक प्रकार के खनियाँ द्वारा सेवन की गयी हैं। इनमें उत्तराखण्ड के कई प्रकारों के देश में उत्पादन होता है। रुद्रन-सहन में और रुग्म-रंग में भी बहुत अंतर है। वैज्ञानिकों और विद्युतीयों के देश में उत्पादन होता है। इन देशों के अपनी ही विविधता है।

इनी ही विविधताओं के बावजूद हजारों सालों से देशवासियों में एकात्मका की शरण-परंपरा चली आ रही है। यह हमारे पूर्वजों की कठोर साधान का अनोखा प्रतिष्ठान है। कुम्भ मेलों, चारों शांतों की यात्राओं और अमरनाथ के दर्शन जैसे असंख्य देशवायी श्रद्धा-केन्द्रों का जात सामाजिक एकात्मा का प्रतीक है।

काल के प्रबल प्रवाह, नेतृत्व की ढलती क्षमता, अनेक विदेशी आक्रमणों व गुलामी के कारण इनमें अंतर्निहित एकात्मता की भावना पर लगातार प्रहार होते रहे हैं। चराचर में आत्म-तत्त्व के बोध की जीवन-दृष्टि भी कमज़ोर इड़ती गई है। फलस्वरूप, समाज में विषयटन, अशांति, अनाचार और आपसी कलह बढ़ता जा रहा है।

विकसित करे जाने वाले सम्पन्न देशों में आत्म-तत्त्व का बोध दुर्लभ है। उन्होंने उपभोग पूर्ति को ही जीवन का चरण लक्ष्य माना है। उपभोगवादी दृष्टि व्यक्तिगत सुख-सुविधाओं में ही समाजन मानती है। वह मानव की प्राकृतिक विशेषता अथवा मानवीयता को उभरने नहीं देती।

उन देशों में कोटुविक जीवन में आत्म-तत्त्व की भावना पाना कठिन है। परिं-पली के आजीवन साथ-साथ रहने की वहाँ अवधारणा ही नहीं है। ऐसी

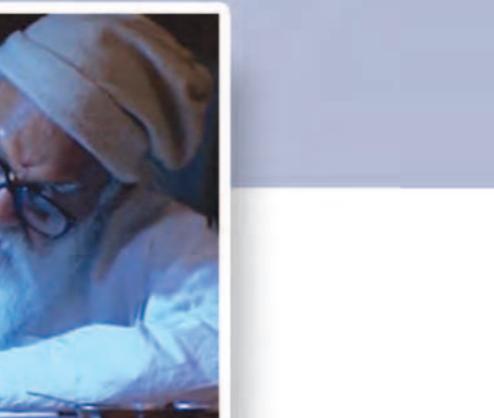
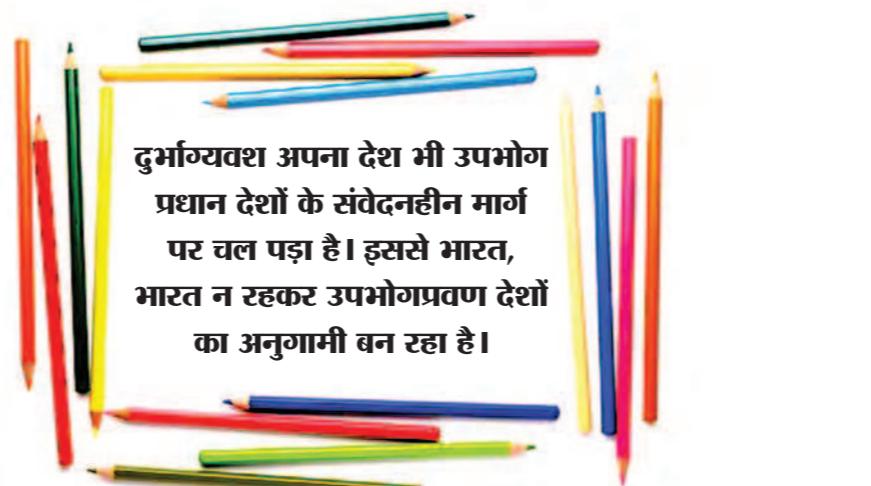
रिस्ति में वहाँ की नई पीढ़ी में व्यक्तिगती जीवन-दृष्टि ही एवं प्रवाहर करती है। उपभोग अंचलों में व्युत्पन्न विषयों से बदलता है। अनेक प्रकार के खनियाँ द्वारा सेवन की गयी हैं। इनमें उत्तराखण्ड के कई प्रकारों के देश में उत्पादन होता है। रुद्रन-सहन में और रुग्म-रंग में भी बहुत अंतर है। वैज्ञानिकों और विद्युतीयों के देश में उत्पादन होता है। इन देशों के अपनी ही विविधता है।

इनी ही विविधताओं के बावजूद हजारों सालों से देशवासियों में एकात्मका की शरण-परंपरा चली आ रही है। यह हमारे पूर्वजों की कठोर साधान का अनोखा प्रतिष्ठान है। कुम्भ मेलों, चारों शांतों की यात्राओं और अमरनाथ के दर्शन जैसे असंख्य देशवायी श्रद्धा-केन्द्रों का जात सामाजिक एकात्मा का प्रतीक है।

लेकिन दुर्भाग्यवश, अपना देश भी उपभोगप्रवाह देशों के संवेदनहीन मार्ग पर चल पड़ा है। इससे भारत, भारत न रहकर उपभोगप्रवण देशों का अनुगमी बन रहा है।

इस खतरे को भाष्यकर स्व. दीनदयाल जी ने 'एकात्म मानव दर्शन' का उपाय प्रस्तुत किया था। उन्होंने इस दर्शन को देश के अनेक प्रतिष्ठित विचारकों के सम्मुख रखा था। उनसे विश्वत विचार-विनिमय किया था। स्व. श्री राजगोपालाचारी ने भी इसे सराहा था। प.पू. गुरु जी ने इसे 'सामाजिक संवीकारी' कहा था। भारतीय जनसंघ के विजयवाड़ा अधिवेशन में इसे सर्वसमानि स्वीकृत किया था। किन्तु दीनदयाल जी की हत्या के बाद उनके 'एकात्म मानव दर्शन' को भी सबने लिलांजलि दे डाली है।

'एकात्म मानव दर्शन' भारतीय जीवन दर्शन का ही नया नामकरण माना जा सकता है। भारतीय जीवन दर्शन मानव-मानव में भेद नहीं करता।



नानाजी की पाती युवाओं के नाम

अन्यथा चराचर में आत्म-तत्त्व अनुभव करने की संभावना ही नहीं होती। वह हर एक नावरिक को मानव मानकर ही व्यवहार करता है। उपयोग का लक्ष्य समाज की आवश्यकता पूर्ण करता था। बचत पर तीनों अंगों के समान अधिकार होता था। उग्नों की इकाइ परिवार होती थी। परिणामस्वरूप, समाज में दीनदयाल जी चिंतित हुए थे। उपभोग का प्रवंश एं, दीनदयाल जी से बढ़ रहा है। उससे स्वतंत्र भारत में तीनों अंगों के उपभोग प्रधान जीवन का प्रधान है। यादान्वयों एं फलों-फूलों के कई प्रकारों के देश में उत्पादन होता है। रुद्रन-सहन में और रुग्म-रंग में भी बहुत अंतर है। वैज्ञानिकों और विद्युतीयों के देश में उत्पादन होता है। इन देशों के अपनी ही विशेषता है।

भारतीय जीवन दर्शन की अपनी ही आर्थिक जीवन-दृष्टि है। अन्य देशों में व्यक्तिगत होती थी, न बैकारी की समाजन की विषमता की प्रस्तुत होती थी। व्यक्तिगत समाज के लिए ही काम करने की प्रेरणा मिलती है। व्यक्तिगत समाज के लिए ही वहाँ व्यवसायिक-संगठन खड़े होते हैं।

जयप्रकाश जी की 'समग्र-क्रांति' और दीनदयाल जी के 'एकात्म मानव दर्शन' का एक ही लक्ष्य है - भारतीय सामाजिक जीवन-दृष्टि को पुनर्प्रस्थापित करना।

प.पू. गुरु जी की आशीर्वाद से दीनदयाल शोध संस्थान का जन्म हुआ था। उन्होंने के कर्कमलों से इसका उद्घाटन हुआ था। उद्घाटन समारोह को पाइडचेरी के अग्रवेंद शाश्रम की पूज्य माता जी ने अपना शुभाशीर्वाद भेजा था। दीनदयाल शोध संस्थान 'एकात्म मानव दर्शन' को व्यवहारिक धरातल पर मिलने का खतरा खड़ा हुआ है।

संस्थान ने इस कार्य के अनेक व्यापी अंचलों में प्रयोगात्मक रूप में आजमा कर देखा है। इन प्रयोगों के अनुभवों के लियोड के विक्री क्षेत्र में अधिक विकसित किया जा रहा है।

इन अनुभवों ने "एकात्म मानव दर्शन" की व्यवहारिकता को रेखांकित किया है।

संस्थान ने एकात्मता का प्रतिपादन करता है, वही व्यक्ति 'वर्ग-संघर्ष' मूलक यूनियन वाली की भी वकालत करता है। ऐसे परस्पर दियोधी कार्य 'भारतीयता' के नाम पर स्वतंत्र भारत में चलाए जा रहे हैं।

भारत की आधोगिक जीति एकात्मता के आधार

शुभाकांशी

नाना देशमुख

(नाना देशमुख)

